कीन्स का उत्पादन एवं रोजगार का सिद्धान्त
[KEYNES' THEORY OF OUTPUT AND EMPLOYMENT]

उत्पादन, आय तथा रोजगार की समरूपता
(HOMOGENEITY IN OUTPUT, INCOME AND EMPLOYMENT)

- केन्सीय विश्लेषण में (i) आय, (ii) रोजगार तथा (iii) उत्पादन में कोई अन्तर नहीं है।
- इसलिए आय के सन्तुलन स्तर का अर्थ उत्पादन का सन्तुलन स्तर तथा उत्पादन के सन्तुलन स्तर का अर्थ रोजगार का सन्तुलन स्तर है।

अर्थात्

आय का सन्तुलन स्तर = उत्पादन का सन्तुलन स्तर = रोजगार का सन्तुलन स्तर

आय (अथवा उत्पादन अथवा रोजगार) के सन्तुलन स्तर से अभिप्राय उस स्तर से है जिस पर सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की

कुल (या समग्र) पूर्ति (AS) = कुल (या समग्र) मांग (AD)

अथवा

बचत S = निवेश (I)

Diagram:-

समग्र पूर्ति (AS) से अभिप्राय अर्थव्यवस्था में वस्तुओं तथा सेवाओं के प्रवाह से है। इसे 'मूल्य-वृद्धि' या राष्ट्रीय आय के रूप में मापा जाता है। आय (Y) के दो मुख्य घटक—(i) उपभोग तथा (ii) बचत हैं।

समग्र पूर्ति = उपभोग + बचत

$$(AS = Y = C + S)$$

समग्र मांग (AD) से अभिप्राय अर्थव्यवस्था में वस्तुओं तथा सेवाओं की कुल मांग से है। इसे वस्तुओं तथा सेवाओं पर किए जाने वाले समग्र व्यय के रूप में मापा जाता है। इसके दो मुख्य घटक (i) उपभोग व्यय (C) तथा (ii) निवेश व्यय (I) हैं।

अतः :

समग्र मांग = उपभोग व्यय + निवेश व्यय

$$(AD = C + I)$$

केन्सीय विचारधारा के अनुसार आय/उत्पादन का सन्तुलन स्तर (Equilibrium Level of Income/Output in the Keynesian Framework)

केन्सीय विचारधारा के अनुसार आय, उत्पादन तथा रोजगार के सन्तुलन की व्याख्या दो दृष्टिकोणों से की जा सकती है :

(1) समग्र पूर्ति-समग्र मांग दृष्टिकोण (AS = AD Approach)

(2) बचत-निवेश दृष्टिकोण (S = I Approach)

(1) समग्र पूर्ति-समग्र मांग दृष्टिकोण (AS-AD Approach)

समग्र मांग = समग्र पूर्ति (AD = AS),

सभी साधनों का पूर्ण रोजगार प्राप्त नहीं होता अर्थात कुछ साधन बेरोजगार रहते हैं, अधूरा रोजगार सन्तुलन (Underemployment Equilibrium) की स्थिति

केन्सीय विचारधारा के अनुसार कुल या समग्र पूर्ति फलन
(AS FUNCTION IN THE KEYNESIAN FRAMEWORK)

केन्स के अनुसार, रोजगार के सम्बन्ध में कुल पूर्ति फलन नीचे से ऊपर की ओर उठती हुई रेखा है। यह रेखा आय के स्तर तथा रोजगार के स्तर को प्रकट करती है। इसका तात्पर्य होता है कि आय तथा उत्पादन में वृद्धि रोजगार में वृद्धि के अनुपात में होती है

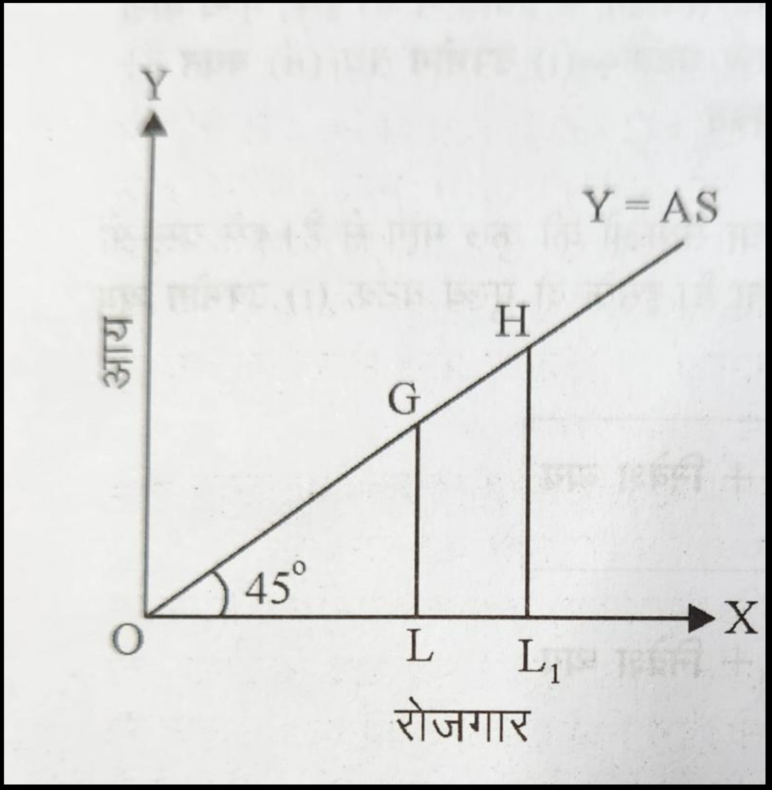

केन्सीय विचारधारा में कुल या समग्र मांग फलन
[AGGREGATE DEMAND (AD) FUNCTION IN THE KEYNESIAN FRAMEWORK]

केन्सीय विचारधारा में कुल या समग्र मांग (AD) फलन उपभोग (C) फलन तथा निवेश (I) फलन का जोड़ है।

कुल मांग = उपभोग व्यय + निवेश व्यय

(AD = C + I)

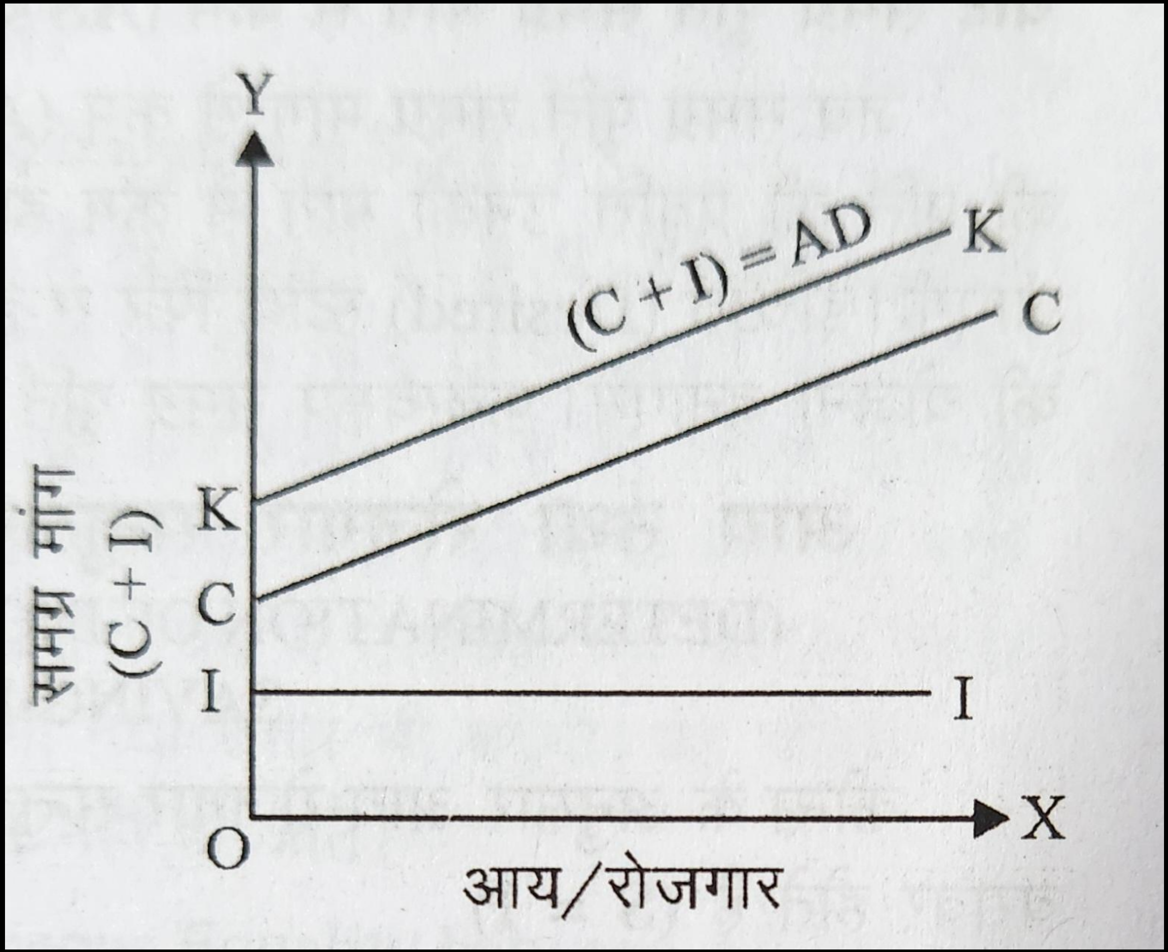

आय तथा रोजगार सन्तुलन का निर्धारण

कुल या समग्र पूर्ति = कुल या समग्र मांग

आय तथा रोजगार के सन्तुलन का निर्धारण उस स्थिति में होता है, जिसमें कुल मांग तथा कुल पूर्ति बराबर होती है, अर्थात आय/उत्पादन उस बिन्दु पर निर्धारित होता है, जिस पर कुल मांग वक्र (AD Curve) कुल पूर्ति वक्र (AS Curve) को काटती है।

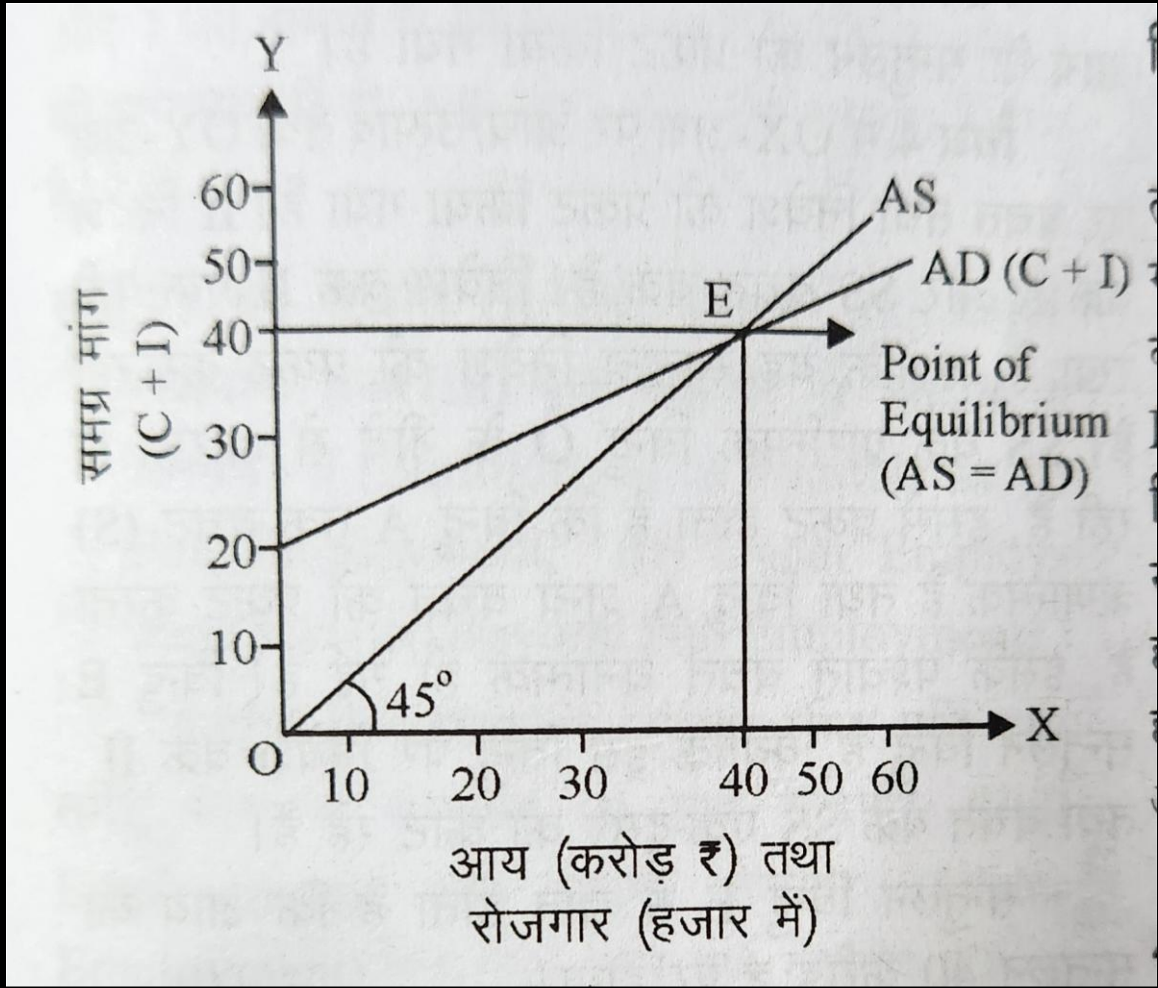

इस चित्र से स्पष्ट होता है कि अर्थव्यवस्था में सन्तुलन की स्थिति में 40 हजार श्रमिकों को रोजगार प्राप्त होगा। सन्तुलन की अवस्था में अर्थव्यवस्था में

समग्र मांग = समग्र पूर्ति = 40 करोड़ ₹ = 40,000 श्रमिक (रोजगार का स्तर)

यदि समग्र पूर्ति समग्र मांग से अधिक (AS > AD) हो तो क्या होता है? (What happens if AS > AD?)

यदि समग्र पूर्ति समग्र मांग से कम (AS < AD) हो तो क्या होता है? (What happens if AS < AD?)

आय तथा रोजगार सन्तुलन का निर्धारण : बचत-निवेश दृष्टिकोण

(DETERMINATION OF INCOME AND EMPLOYMENT EQUILIBRIUM : SAVING-INVESTMENT APPROACH)

केन्स के अनुसार आय-रोजगार सन्तुलन निर्धारण उस स्थिति में भी होता है, जिसमें बचत तथा निवेश बराबर होते हैं **(S = I)**

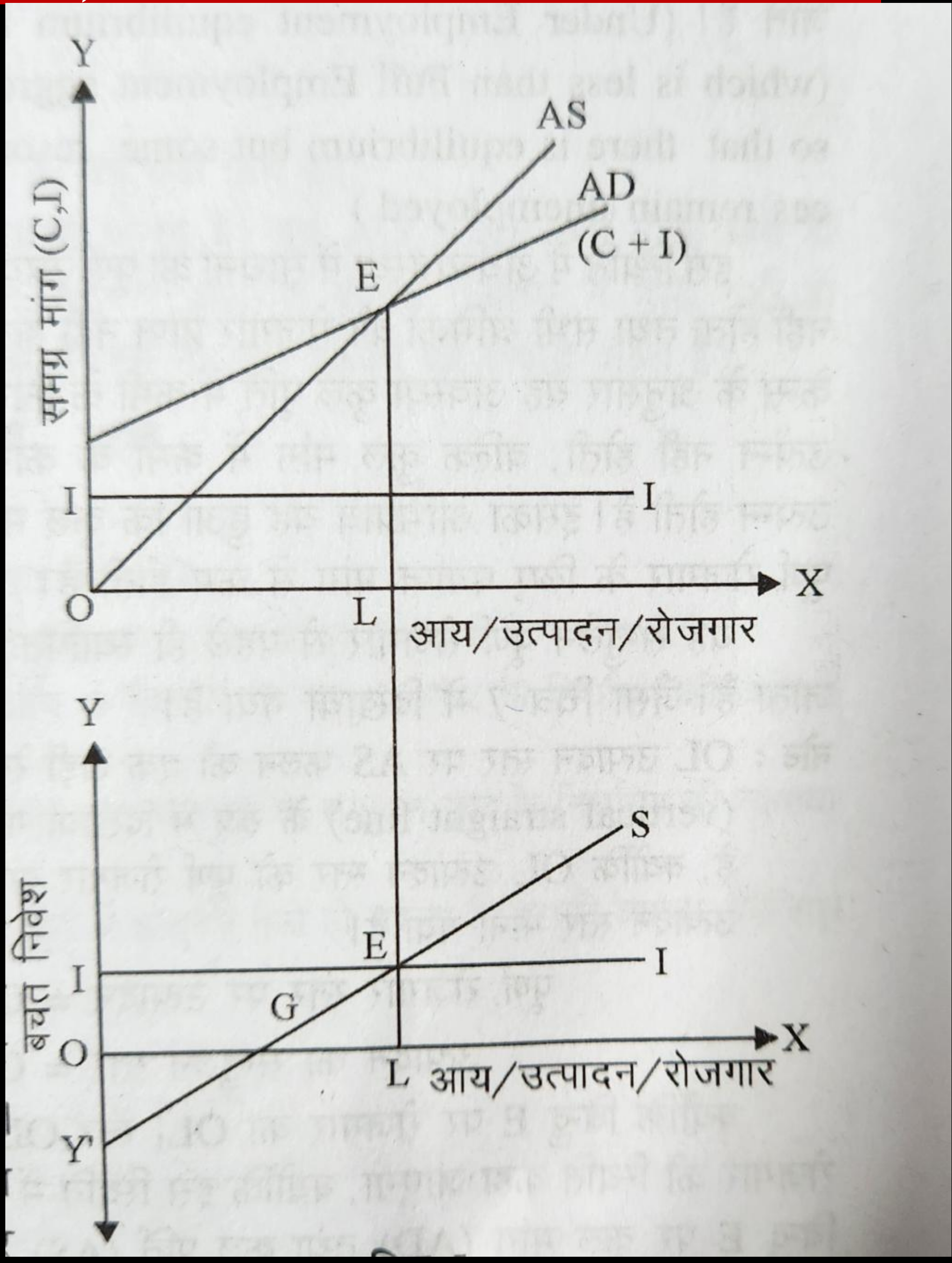

यदि बचत निवेश से अधिक (S > I) हो, तो क्या होता है? (What happens if S > I?)

यदि बचत निवेश से अधिक (S > I) हो होती है तो नियोजित उत्पादन का स्तर नियोजित व्यय के स्तर से अधिक हो जाएगा।

यदि बचत निवेश से कम (S < I) हो, तो क्या होता है? (What happens if S > I?)

पूर्ण रोजगार सन्तुलन (Full Employment Equilibrium)

इस स्थिति में समग्र पूर्ति (AS) तथा समग्र मांग (AD) बराबर होते हैं तथा समग्र मांग इतनी पर्याप्त होती है कि उन सभी व्यक्तियों को जो मजदूरी की वर्तमान दर पर काम करने के लिए तैयार हैं, रोजगार मिल जाता है।

अर्थात समग्र मांग तथा समग्र पूर्ति में समानता उस बिन्दु पर होती है, जो पूर्ण रोजगार के स्तर को प्रकट करता है। इस स्थिति में *अनैच्छिक बेरोजगारी (Involuntary Unemployment) नहीं पाई जाती।* इस स्थिति में कुल मांग पूर्ण रोजगार के लिए आवश्यक कुल पूर्ति से न तो कम है और न ही अधिक है।

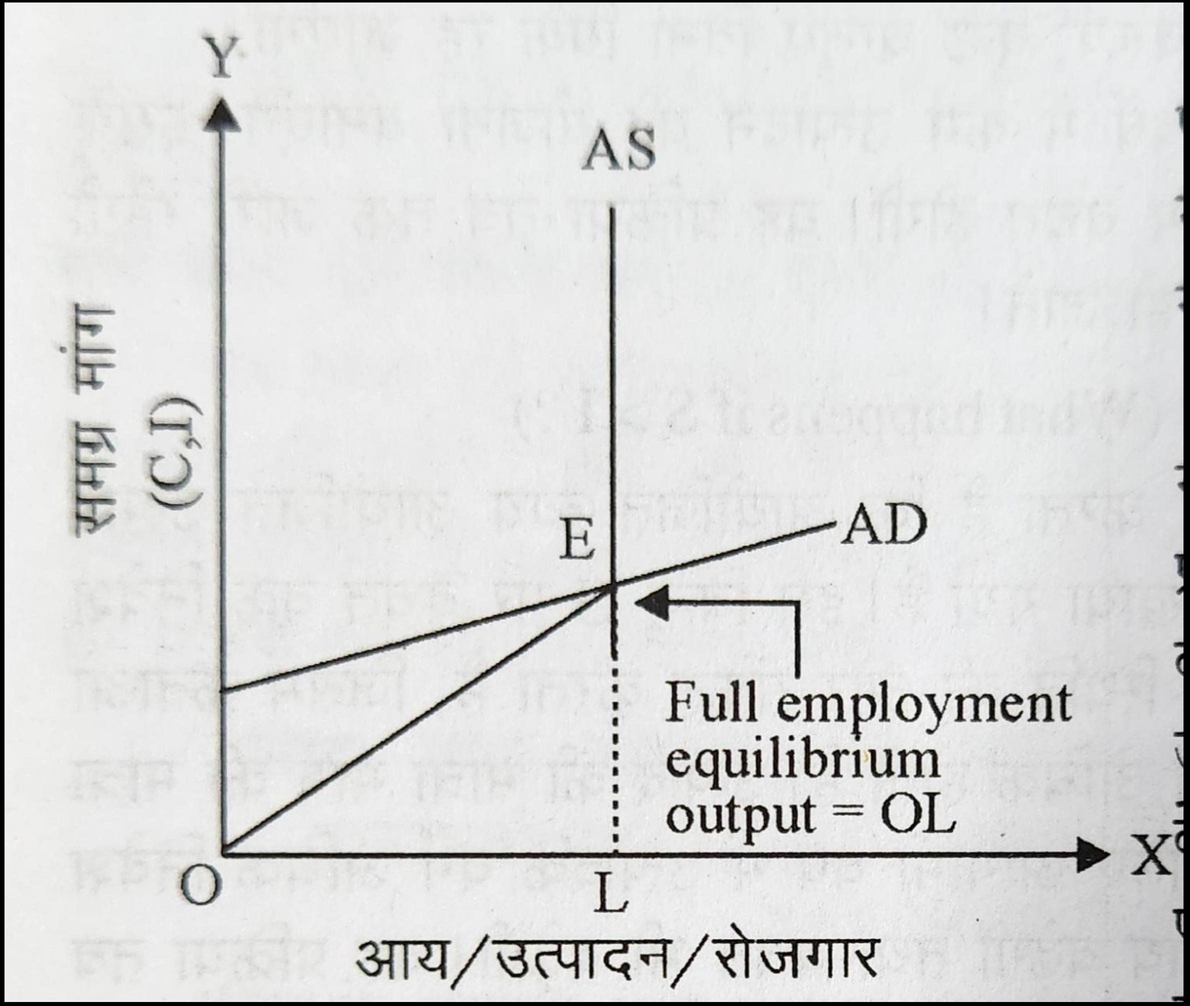

अपूर्ण रोजगार सन्तुलन (Under Employment Equilibrium)

अपूर्ण रोजगार सन्तुलन की स्थिति में, जिसमें कुल मांग (AD) (जो पूर्ण रोजगार वाली कुल मांग से कम है) तथा कुल पूर्ति (AS) में समानता अर्थात सन्तुलन पाया जाता है, परन्तु कुछ साधन बेरोजगार रह जाते है।

इस स्थिति में अर्थव्यवस्था में साधनों का पूर्ण उपयोग नहीं होता तथा सभी श्रमिकों को रोजगार प्राप्त नहीं होता। केन्स के *अनुसार यह अवस्था कुल पूर्ति में कमी के कारण उत्पन्न नहीं होती, बल्कि कुल मांग में कमी के कारण उत्पन्न होती है।* इसका अभिप्राय यह हुआ कि कुल मांग पूर्ण रोजगार के लिए पर्याप्त मांग से कम होती है।

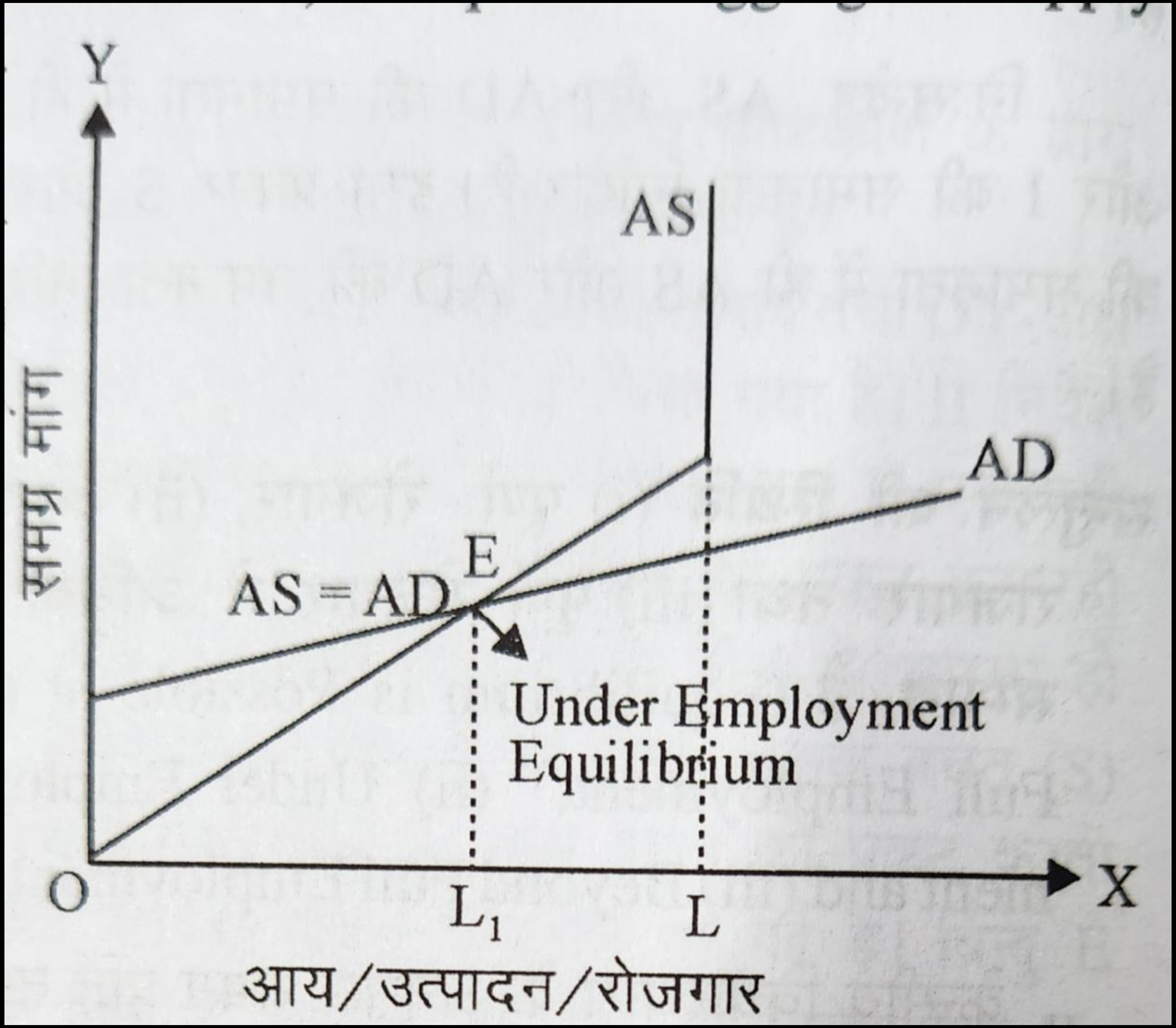

अति पूर्ण रोजगार सन्तुलन (Over-Full Employment Equilibrium)

इस स्थिति में कुल या समग्र मांग पूर्ण रोजगार के स्तर के लिए आवश्यक मांग से अधिक होती है। कुल या समग्र पूर्ति में वृद्धि नहीं हो सकती, क्योंकि उत्पादन के साधनों का पहले ही पूर्ण उपयोग हो रहा है। अतः, कुल मांग, वस्तुओं तथा सेवाओं के उपलब्ध प्रवाह से अधिक हो जाती है। इसके फलस्वरूप कीमतों का बढ़ना आवश्यक हो जाता है।

केन्स के अनुसार, कीमतों में उसी अनुपात में वृद्धि होती है, जिस अनुपात में मांग में वृद्धि होती है। इसलिए उत्पादन में अधिक वृद्धि नहीं होती और कुल पूर्ति (AS) कुल मांग (AD) के बराबर हो जाती है। अतः अर्थव्यवस्था में अति पूर्ण रोजगार सन्तुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। अति पूर्ण रोजगार सन्तुलन में केवल कीमतों में वृद्धि होती है। इस स्थिति में वस्तुओं तथा सेवाओं के प्रवाह में वृद्धि नहीं होती। इस स्थिति में कुल मांग पूर्ण रोजगार के लिए पर्याप्त मांग से अधिक (Excess) होती है।